कानों में कंगना

(राधिकारमण प्रसाद सिंह)

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

➤ किरन का चरित्र-चित्रण :—

★ राधिकारमण प्रसाद सिंह रचित 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी के मुख्य पात्रों में नारी पात्र किरन है। इस कहानी की घटनाओं में दाम्पत्य-जीवन का मर्म दिखलाई पड़ता है। एक सुखी दाम्पत्य-जीवन के लिए व्यक्ति को कौन-सी गलतियाँ नहीं करनी चाहिए, यही सीख इस कथा में छिपी है। किरन वह पात्र है जिसके माध्यम से लेखक ने भारतीय विचारधारा को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कहानी के घटनाक्रम में किरन की यात्रा किसी फूल जैसी है। कली से विकसित होकर फूल अपनी

सुंदरता और सुगंध के चरम पर पहुँचता है और दूसरों को आनंदित करता है। जब वह दूसरों के जीवन को सुगंधित करने का प्रयास अपनी पूरी क्षमता तक कर चुका होता है, तब मुरझाकर डाल से टूट जाता है। किरन भी अपने बालपन से निकलकर यौवन के मनोरम उत्कर्ष पर पहुँचती है और धीरे-धीरे समय बीतने पर सुखद अनुभवों से विहीन होकर उसकी जीवन-यात्रा समाप्त हो जाती है।

कहानी के आरंभ में किरन का चरित्र किसी अविकसित कली-सा सुकुमार और दोषहीन है। उसके व्यवहार में बालसुलभता थी जो उसके निश्चल और निर्मल व्यक्तित्व का परिचायक है। नरेन्द्र द्वारा यह पूछे जाने पर कि उसके कानों में क्या है, वह चपलता के साथ उत्तर देती है - "कंगना"। उसका यह उत्तर नरेन्द्र को आकर्षित करता है और उसके प्रति प्रेम उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है, परन्तु यह प्रेम-भाव किरन

के हृदय को स्पर्श नहीं कर पाता है। यह एकपक्षीय प्रेम विवाह में परिणत होता है। किरन अपने पिता के आज्ञानुसार नरेन्द्र से विवाह कर लेती है। विवाहोपरान्त उसकी बाल-सुलभ वृतियाँ नारी की यथोचित चेष्टाओं में परिवर्तित हो जाती हैं। विवाह का बंधन एक ओर उसकी स्वच्छंद-प्रकृति को छीन लेता है, तो दूसरी ओर उसमें नव-युवती का मनोरम सौंदर्य भर देता है। लेखक ने लिखा भी है- " कहाँ प्रकृति की निर्मुक्त गोद, कहाँ जगत का जटिल बंधन-पाश। वह अलौकिक भोलापन, वह निसर्ग उच्छवास - हाथों-हाथ लुट गये। उस वनफूल की विमल कांति लौकिक चमन की मायावी मनोहारिता में परिणत हुई।"

— क्रमशः